ओम् शान्ति 20-6-15 मधुबन

मम्मा के 50 वें स्मृति दिवस पर 24 जून 2015 को क्लास में सुनाने के लिए मम्मा की विशेषतायें

(दादी जानकी जी के शब्दों में)

1) हमारे सभी पूर्वज त्यागी तपस्वी मूर्त बनकर रहे हैं, उसमें भी मम्मा नम्बरवन थी। आज भी इन्हों के फोटो देखने और याद आने से एक रौनक आ जाती है। मम्मा बाबा से बहुत अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिली हैं। जैसे बाबा में दया भाव, क्षमा भाव था, ऐसे मम्मा भी दयालु कृपालु थी। कैसी भी आत्मा होगी तो मम्मा कहेगी बच्चे सब ठीक हो जायेगा। कभी नहीं कहा होगा कि यह क्यों किया? पास्ट इज़ पास्ट। बच्चे फिर से नहीं करना। मम्मा करेक्शन नहीं देती थी, यह सब अनुभव इसलिए सुनाये जाते हैं, आप भी यह अनुभव करो। अच्छे अनुभवों से जो हमारे में कमी है, खलास हो जायेगी।

2) मम्मा समझाती थी सबसे अच्छी बात है रियलाइजेशन, कोई भी बात जब रियलाइज होती है तब परिवर्तन आता है। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा का बच्चा हूँ, कर्मों की गुह्यगति को समझा, लेकिन समझने के साथ जब उसे रियलाइज किया तब वह स्वरूप में आया।

3) रियलाइजेशन के बिगर परिवर्तन नहीं आता है। बाबा की मुरली से रियलाइजेशन होता है, हर रोज़ कोई न कोई बात ऐसे लग जाती है, जो दिल कहता है यह बात नहीं करनी है। बाबा ने यह बात सभा में नहीं बोली लेकिन पर्सनली जैसे मेरे को बोला है। रियलाइजेशन से फौरन चेकिंग होती है, उसमें टाइम वेस्ट नहीं जाता है।

4) ध्यानी दादी मम्मा की लौकिक में मासी थी, उसको देख मम्मा समर्पण हुई। ध्यानी दादी की शादी हुई थी लेकिन थोड़े समय के बाद पति ने शरीर छोड़ दिया, उस दुःख की घड़ियों में वह बाबा के पास आई तो बाबा ने ऐसी दृष्टि दी जो वह ध्यान में चली गई, बाबा ने सेकण्ड में जैसे सब दुःख हर लिये। ध्यानी दादी ने मम्मा को धर्म की बेटी बनाया था इसलिए ध्यानी दादी को खुशी बहुत थी।

5) मम्मा ने भी कैसे बाबा की यादों में शरीर छोड़ा, सुबह नास्ते के टाइम मम्मा ने सभी को अपने हाथों से अंगूर खिलाया, दृष्टि दी, बाबा बाजू में साथ में बैठा था। फिर शाम को चार बजे देह त्याग किया। जरा भी दुःख नहीं हुआ क्योंकि मम्मा शरीर के अधीन नहीं थी, दुःख करने के संस्कार दुःखहर्ता ने खत्म कर दिये। कोई ने भी शरीर छोड़ा, टाइम आया ओके, अगर हम अच्छे वायब्रेशन रखेंगे तो वो आत्मा भी अच्छा शरीर लेगी। और अगर हम रोयेंगे पीटेंगे तो हम उसके दुश्मन ठहरे क्योंकि वह आत्मा भी दुःखी होगी, रोना पीटना तो कलियुगी मनुष्यों का रसम-रिवाज है। ब्राह्मण आत्माओं को भगवान ने निश्चय बुद्धि से मायाजीत, मोहजीत बना दिया है। मायाजीत की निशानी है मोहजीत।

6) मम्मा ने ध्यान खिंचवाया बच्चे, इस पढ़ाई की बहुत वैल्यु चाहिए। वैल्यु होगी तो पढ़ाई प्रैक्टिकल लाइफ में होगी। भगवान की पालना का कदर होगा। मुझे स्वयं भगवान ने अपना बनाया है, बचपन से लेकर आज तक उसकी पालना के नीचे रहे हैं। कभी अधीनता का संस्कार ही नहीं है। पालनहार इतनी पालना दे रहा है, भावना यह है कि ईश्वर की पालना के अन्दर सभी आ जावें। योग से बल मिलता है फिर नेचुरल मम्मा बाबा जैसे तपस्वी मूर्त बन जाते हैं।

7) एक बारी मम्मा को मैंने पूछा कि मम्मा मैं पुरुषार्थ में क्या ध्यान रखूँ? तो मम्मा ने कहा किसका अवगुण थोड़ा भी चित पर नहीं रखना। वो दिन आज का दिन। अगर कोई भी बात मेरे चित पर है तो मैं एकाग्रचित नहीं हो सकती। अन्तर्मुखता से एकाग्रता होती है।

8) मम्मा, मम्मा कैसे बनी? मम्मा वन्डरफुल एक्जाम्पुल कन्या थी। मम्मा कभी ऐसे मुरली हाथ में लेकरके, पढ़कर नहीं सुनाती थी, परन्तु बाबा से एक बारी सुना तो वही एज इट इज़ कैच करके ओरली सुनाती थी। मम्मा अपने माइन्ड को बहुत शान्ति से चलाती थी। यज्ञ के लिए प्यार, नियमों अनुसार चलना, एक्यूरेट रहना, टाइम पर क्लास में आना। ऐसे मम्मा ने हमें प्रैक्टिकल मैनर्स सिखाये हैं। बाबा की मुरली ध्यान से सुननी चाहिए, फिर उसे जीवन में लानी चाहिए।

9) मम्मा का अशरीरीपन का अभ्यास ऐसा रहा जब हम कभी मम्मा के हाथ में हाथ देते थे तो हम भी अशरीरी हो जाते थे इसलिए हम मम्मा का हाथ पकड़ते थे क्योंकि मम्मा का हाथ स्पेशल था, तो हम आपस में कहते थे तुम छोड़ो मैं थोड़ा समय मम्मा का हाथ पकडूँ ना। मम्मा के बाजू में बैठेंगे तो कुछ बोलने का है ही नहीं, ऐसे लगता था कि हम भी ऐसा अभ्यास करें। तो जैसे माँ बाप ऐसे बच्चे होने चाहिए तभी तो नम्बरवन में आयेंगे ना।

10) मम्मा समय का कदर बहुत करती थी, कभी भी मम्मा के मुख से कोई एक्स्ट्रा शब्द नहीं निकलेगा। कभी किसकी गलती किसको सुनाई नहीं होगी। कोई मम्मा को सुनाये तो उसे समाके, उसे शिक्षा देके बात खत्म कर देती थी, ऐसी रॉयल्टी से हम एक दो की पालना करें तो बहुत उन्नति हो सकती है। अभी भी अगर कोई चाहे तो नम्बरवन में आ सकता है, पास्ट इज़ पास्ट, जरा-सा भी पीछे की बातों को न सोचे। पीछे की बात सोचना माना अपने को बांधके रखना। नम्बरवन में आने वाला सबसे सीखता है। तो ले लो दुआयें माँ बाप की, गठरी उतरे पाप की। कोई भी पुराना पाप रहा हुआ न हो तो नम्बरवन में आ सकेंगे।

11) मम्मा का भक्ति में जो गायन है जगत् अम्बा, काली, सरस्वती, वैष्णव देवी, शीतला, दुर्गा... यह सब स्वरूप मम्मा में देखे हैं। यज्ञ में जिस दिन से आई तो जैसा नाम था राधे वह प्रैक्टिकली सतयुगी राधे के संस्कार लेकर आई। वही फिर लक्ष्मी बन रही है तो वो सारे लक्षण उसमें देखे। फिर काली है तो मम्मा के सामने जायेंगे तो पुराने संस्कार भस्म। बड़े-बड़े गृहस्थियों को, बड़ी उम्र वाले बुजुर्गों को भी मम्मा ने योगी बना दिया। मम्मा की कभी कहीं ऑख नहीं डूबी, न खाने में, न पहनने में। मम्मा सदा त्यागी तपस्वी मूर्त होकर रही। हम उस माँ के बच्चे हैं। जब मम्मा ने शरीर त्याग किया तो कईयों को मम्मा की लाइट का, ज्योति का अनुभव होने लगा। भगत लोग उस माँ को पुकारते हैं उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती है। सरस्वती के पुजारी भिन्न कामना से करेंगे, काली के पुजारी बलि चढ़ायेंगे। शीतला देवी के सामने आते ही शीतल हो जायेंगे। ऐसे माँ के हम बच्चे हैं। हम देखते हैं कि हमारे मम्मा बाबा कैसे हैं? जिनके दर्शन करने के लिए गला कांटते हैं कि सिर्फ एक बार माँ का दर्शन हो जाये और हम उस माँ के बच्चे हैं, उनकी दृष्टि से पले हैं, उनके हाथों से खाया है।

12) मम्मा ने कभी आवाज से हँसा भी नहीं होगा। मम्मा के मुस्कराने में ही हमको समझ मिल जाती थी। जैसे गुल्जार दादी सन्देश लेके आती है और सुनाती है कि बाबा ने मुस्कुराया तो उस मुस्कराने में ही लेन देन हो गयी। तो मुख्य बात है मम्मा बाबा को देख अन्तर्मुखी होना, एकाग्रता की शक्ति, स्थिर, अडोल, अचल रहने की एकरस ऊंची स्थिति फार एवर हो सकती है। तो यह वरदान आज मम्मा डे पर मीठी माँ से सभी ले लो, तो मम्मा समान सफलता मूर्त सो साक्षात्कार मूर्त बन सकेंगे।

13) मम्मा सन्तुष्टमणी होकर रही और बाबा की मस्तक मणी बन गई। सदा सन्तुष्ट रहना, यह कितना भाग्यवती बनना है। मम्मा भगवती माँ है। वो कहती है सदा सन्तुष्ट रहो, शान्त रहो। एक दो को प्यार से देखो। जैसे मम्मा बाबा ने हमको पालना दी है, ऐसे एक दो को प्यार से देखो, पालना दो।

14) मम्मा हर मर्यादा में एक्यूरेट चली। जरा-सा भी फैमिलीयरिटी में कभी मम्मा को नहीं देखा। मीठी-मीठी मम्मा की यही हम बच्चों के लिए कामना रही है कि बाबा के यह बच्चे ऐसे गुलाब के फूल होवें। तो अपनी दृष्टि वृत्ति ऐसी हो, रूहानियत में रह करके एकदम वरदानी माँ से वरदान ले लो। आज जो वरदान मिलेगा वो सदा के लिए हो जायेगा। किसी में कोई कमी-कमजोरी हो स्वाहा हो जाए। दूसरे की कमी आज से कभी नहीं देखना। दूसरे की कमी को देखने से उसकी कमी मेरे में आ जायेगी इसलिए कभी यह भूल नहीं करना। किसी में किसी भी प्रकार की कोई कमी है, तो उसे बलि चढ़ा दो। अगर कमी कमजोरी रह गई तो वो शीतला, काली, दुर्गा, जगत अम्बा का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

15) मम्मा हर परिस्थिति में सदा अचल अडोल, एकरस, स्थिर रही, कभी हलचल में नहीं आई। तो हमारी जीवन भी ऐसी हो जो अनेक आत्माओं को परिवर्तन होना सहज हो जाए। हमको मम्मा बाबा ऐसी जीवन जीना सिखा रहे हैं। तो कोई कैसी भी बात हिलाने वाली आ जाए, हिलना नहीं, स्थिर रहना।

16) अभी जो बाबा से इशारे मिल रहे हैं उसे दिल से स्वीकार करो। तो शिवबाबा वरदाता, ब्रह्मा बाबा भाग्यविधाता है, मम्मा क्या है? हमको प्रैक्टिकल बनाने वाली भगवती माँ है। एलर्ट, एक्यूरेट, आलराउण्डर, एवररेडी ऐसा बनने के लिए तो तो नहीं करना... लेकिन बनना है हमको ही। जो बड़े कहें वह करके दिखाना है।

17) मम्मा की अचल अडोल एकरस स्थिति इन आंखों से देखी है। मम्मा ने कैसे कर्मभोग पर कर्मयोग से विजय प्राप्त करके, अन्तिम क्षणों में सब बच्चों को अपने हस्तों से अंगूर खिलाते, मुस्कराते चेहरे से सबको नज़र से निहाल करके इस साकार वतन से विदाई ली।

18) मीठे बाबा ने जो कहा मम्मा ने उसे अपने स्वरूप से दिखाया। बाबा से जो कुछ सुना उसे समाया और स्वरूप में लाया। मम्मा से एक बार हमने पूछा मम्मा आप क्या पुरुषार्थ करती हो? तो मम्मा ने कहा मैं सदा मन को प्लेन रखती हूँ तब से यह ध्यान रहता है कि कुछ भी हो जाए मुझे मन को प्लेन रखना है, कभी व्यर्थ के ख्यालातों से मन भारी नहीं करना है।

19) मम्मा के चेहरे पर कभी आश्चर्य के चिन्ह नहीं देखे! मम्मा को ड्रामा का पाठ बहुत पक्का था। उन्हें साक्षी होकर हर सीन देखने की इतनी अच्छी आदत थी जो कोई भी दृश्य देखते कभी हलचल में नहीं आई। सदा एकरस, मुस्कराता हुआ चेहरा देखा। वही आदत हम सबको भी डालनी है।

20) मम्मा का सबसे बड़ा गुण था हाँ जी, जी बाबा... मम्मा ने कभी भी दूसरा शब्द नहीं बोला। तो हमें भी बाबा की श्रीमत में सदा हाँ जी, हाँ जी करना है। अपनी मनमत एड नहीं करना है। मम्मा ने कभी नहीं कहा होगा कि यह कैसे हो सकता है! यह ऐसा है, वह वैसा है। मम्मा ने कभी किसी के अवगुण चित पर नहीं रखे। कभी किसी के सामने किसी बच्चे का अवगुण वर्णन नहीं किया इसलिए मम्मा नम्बरवन में चली गई। तो ऐसी मीठी माँ को हम सबको भी फालो करना है।

21) मम्मा हमेशा कहती यह भी आशा क्यों रखते हो कि यह अच्छा बनें, वह आपेही अच्छा बनेगा पहले तुम अच्छा बनो। दूसरों की जिम्मेवारी लेने के बजाए पहले अपनी जिम्मेवारी लो। इसमें मुख्य बात याद रहे कि बाबा मुझे बना रहा है, मुझे अब बनना है, इसमें किसी को न देख करके खुद को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाना है। फिर सच्चाई और स्नेह से सबका सहयोगी बनना यह मेरा फर्ज है।

22) जैसे हमारी मीठी दीदी कहती थी अब घर चलना है, दादी कहती कर्मातीत बनना है, ऐसे मीठी मम्मा कहती जो करना है अभी कर लो। मम्मा का विशेष स्लोगन था – हर घड़ी अन्तिम घड़ी है इसलिए मम्मा कहती कल तो काल का नाम है, कल पर कुछ भी नहीं छोड़ना।

23) मम्मा के यह भी बोल सदा याद रहते हैं कि हुक्मी हुक्म चला रहा है। बाबा का जो हुक्म (आज्ञा) कभी अपने मन की मत या परमत का प्रभाव मम्मा पर नहीं पड़ा। एक बार मम्मा के साथ बैठी थी तो मम्मा ने कहा जनक तुम्हें याद रहता है कि जहान मुझे देख रहा है। उस समय तो जहान का ज्ञान भी नहीं था, लेकिन आज अनुभव होता है कि सारा जहान कैसे हम लोगों का देख रहा है इसलिए अपने एक एक संकल्प, बोल और कर्म पर पूरा ध्यान रहता है।

24) मम्मा ने कभी मुरली मिस नहीं की। बाबा की मुरली के लिए अगर कोई कहता कि बाबा ने जो मुरली चलाई इसका मतलब यह है या बाबा ने ऐसे क्यों कहा! तो मम्मा उसे आंख दिखाती। बाबा ने कहा माना सत वचन है, उसमें कभी कोई प्रश्न उठाना यह भी डिसरिगार्ड है। इतना मम्मा बाबा के एक एक बोल को रिगार्ड देती थी। मम्मा को सवेरे 2 बजे उठकर विशेष एकान्त में बैठ तपस्या करने का अभ्यास था, वह रात को उठकर छत पर चली जाती और एकान्त में बाबा से मीठी रूहरिहान करती।

25) हर कारण का निवारण मम्मा बाबा ने बड़ी शान्ति से किया है। विघ्न तो शुरू से अनेक आते रहे हैं, पर कभी मम्मा को हलचल में नहीं देखा। सदा यही शब्द सुने कि बाबा का काम है, सब ठीक हो जायेगा। तुम बच्चे अपने किले को मजबूत बनाओ।

26) मम्मा ने बाबा समान बनने का बहुत गहरा पुरुषार्थ किया। बाबा मुरली लिखकर देते मम्मा उसे पढ़कर सुनाती फिर उस पर इतना गहरा मनन चिंतन करके स्पष्ट करती जो एक शब्द पर भी पूरा विस्तार करती जिसे नया भी सुनकर समझ जाये।

27) बाबा बूढ़ा, मम्मा जवान, इतनी छोटी उम्र में इतना पुरुषार्थ और बाबा इतना वृद्ध शरीर में होते भी इतना पुरुषार्थ! वन्डर है। तो कोई नहीं कह सकता है कि मैं नहीं कर सकता। बच्चा भी कर सकता है, देखो, हमारी मीठी गुल्जार दादी बचपन में आई, कैसे सच्चाई सफाई और अपनी निश्चिंत जीवन से बाबा का रथ बन गई। दादा विश्व किशोर अधरकुमार, कैसे पुरुषार्थ करके सबके लिए मिसाल बना, बाबा कहता था यह मेरा वारिस बच्चा है। सदा बाबा का राइट हैण्ड बनकर रहा। हम अपने बड़ों से बहुत कुछ सीखते आये हैं। उन्हें भी फालो करें तो बाप समान बन सकते हैं।

28) ज्ञान का सार है - चुप रहना। मम्मा के जीवन में यह प्रैक्टिकल धारणा देखी। मम्मा का विशेष गुण था धीरज और गम्भीरता। ज्ञानी तू आत्मा की यह पहली निशानी है कि वह ज्ञानमूर्त और गुणमूर्त रहे, जैसे हमारी मम्मा रही क्योंकि गुणों का कर्म और संबंधों से पता चलता है।

29) मम्मा मुख से ऐसे बाबा बाबा नहीं कहती थी पर रिगार्ड बहुत। पढ़ाने वाले के लिए रिगार्ड, समय पर क्लास में आना, अमृतवेला करना। तो सच्चा पुरुषार्थ करने वाला औरों को भी प्रेरता है, उनको देख करके लगता है, मैं भी ऐसे करूँ। तो हम भी अगर अपनी बैठक, बोल, चलन पर ध्यान रखें, अपने लिए भी पुरुषार्थ में अच्छी भावना रखें तो बाबा हमारे में शक्ति भर देता है। हम भी बाबा मम्मा के समान बन सकते हैं।

30) मीठी मम्मा गॉडेज आफ विज़डम थी, मम्मा सेकण्ड में समझ जाती कि अभी इसको व्यर्थ ख्याल आ रहे

हैं। सामने बिठाकर व्यर्थ को ऐसे खत्म कर देती, जो उसे व्यर्थ ख्याल आवे ही नहीं। अक्ल ही न हो परचिंतन करने का या बीती बात को याद करने का।

31) मम्मा की जब तबियत थोड़ी ठीक नहीं थी तो मम्मा पूने में हमारे साथ डेढ़ महीना रही। मम्मा के चेहरे से कभी लगता ही नहीं था कि मम्मा को कोई तकलीफ है। मम्मा बाबा की मुरली रोज़ पढ़ती थी, नोटस भी पढ़ती थी, फिर टेप भी सुनती थी। एक बार मम्मा टेप सुन रही थी, उसमें था मात पिता बापदादा का यादप्यार, तो हमने कहा यह माता, वह पिता.. तो कहा नहीं, हम सबका मात-पिता वह है।

32) मम्मा कितनी निश्चिंत और अचल अडोल रही, कभी चेहरे पर फिकरात के चिन्ह नहीं देखे। कभी कोई ने शरीर भी छोड़ा, कुछ भी हुआ, मम्मा कहेगी ड्रामा। मम्मा के चेहरे पर कुछ भी नहीं आता। मम्मा लास्ट दिनों बैंगलोर गई थी, मम्मा ने वहाँ सभी को ऐसा प्यार दिया, जो छुट्टी नहीं दे रहे थे, सभी आंसू बहा रहे थे लेकिन मम्मा बिल्कुल न्यारी। मम्मा के जीवन में न्यारे प्यारेपन का बहुत अच्छा बैलेन्स था।

33) मम्मा हमेशा कहती जब भी कोई शिक्षा मिले तो उसको सम्भाल कर रखना। कभी यह ख्याल न आये, यह शिक्षा मुझे क्यों मिली, मेरी भूल तो थी नहीं। शिक्षा बड़ी काम की होती है, समय पर काम में आयेगी। मुझे भी कभी कहाँ से शिक्षा मिली तो सम्भाल के रखा है। माइन्ड नहीं किया है कि यह कौन है मुझे शिक्षा देने वाला। नहीं। सीखने की भावना मम्मा ने पैदा की।

34) मुझे शुरू में यज्ञ में नर्स की सेवा मिली थी। तो बीच-बीच में मम्मा पेशेन्ट से मिलने आती थी। मम्मा उन्हें ऐसी दृष्टि देती जो पेशेन्ट एकदम पेशेन्स में आ जाए। मम्मा ने मुझे भी पेशेन्स में रहना सिखा दिया। धीरज और शान्ति मम्मा के चेहरे से सदा अनुभव होती थी।

35) कराची में बाबा, अपने बाबा भवन से टेलीफोन पर मुरली सुनाता था, मम्मा वह मुरली सुनकर हम सबको सुनाती थी तो बहुत मजा आता था। मम्मा बाबा से बहुत सुख पाया है। तो इतना ध्यान रहे हमारी चलन मम्मा जैसी हो। मम्मा, मम्मा है परन्तु सत्यता, धैर्यता, नम्रता और गम्भीरता की मूर्ति रही है, हम सबको भी इसमें मम्मा समान बनना है।

36) यज्ञ में भण्डारी की सिस्टम मम्मा ने शुरू कराई। मम्मा को ब्रह्माभोजन का बहुत महत्व था। विशेष मम्मा अपने हाथों से भोग बनाती थी। कैसे बाबा के लिए प्यार से, शुद्धता से भोग बनाना और लगाना चाहिए, उसमें कितनी श्रेष्ठ भावना होनी चाहिए, यह मम्मा से प्रैक्टिकल में सीखा है। मम्मा कहती भोलानाथ का भण्डारा है, ब्रह्मा भोजन है। इस भोजन के लिए देवताओं को भी कदर रहता इसलिए कभी ब्रह्माभोजन वा भोग का डिसरिगार्ड नहीं करना चाहिए। यज्ञ का एक एक दाना मुहर के समान है, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना।

इतनी मीठी मीठी शिक्षाओं से सजाने वाली, रूहानी प्यार की पालना देने वाली मीठी-मीठी जगदम्बा माँ की दिव्य स्मृति में विशेष 24 जून 2015, बुद्धवार के दिन बहुत-बहुत स्नेह के साथ उन्हें भोग स्वीकार करायेंगे। मधुबन में भी सवेरे भोग लगेगा, आप सभी भी अपने-अपने सेवास्थानों पर ऐसी मीठी द्रोपदी माँ को प्यार से भोग लगाना और उनकी विशेषताओं को स्मृति में रख उनके पद चिन्हों पर चलते समान और सम्पूर्ण बनने की रेस करना जी। यही मीठी मम्मा के प्रति सच्ची स्नेह भरी पुष्पांजली वा श्रंधाजलि है। अच्छा - ओम् शान्ति।